कहाँ क्या ?

१. मंगलाचरण

१. नमस्कार, २. मगलपाठ ।

२. जैनधर्म का स्वरूप ३– ८

३. अतीत की झलक ९–४८

१. जैन धर्म का अनादित्व, २. भगवान् ऋषभदेव, ३. उपनिषदो मे जैन धर्म, ४ पुराणो मे जैन धर्म, ५. जैन धर्म के तीर्थंकर, ६. भगवान् नेमिनाथ, ७. भगवान् पार्श्वनाथ, ८. भगवान् महावीर, ९. भगवान् महावीर का उदार सघ, १०. महावीर की देन, ११. तत्कालीन धर्म प्रवर्तक, १२. गोशालक, १३. महावीर और बुद्ध, १४. महावीर और बुद्ध मे समानता और विभिन्नता, १५. दोनो सस्कृतियो की मूल प्रेरणा एक, १६. सात निन्हव और अन्य विपक्षी, १७ भगवान् द्वारा अचेलत्व की प्रशसा, १८. वैदिक एव जैन सस्कृतियाँ, समन्वयात्मक वृत्ति में परिपूर्ण, १९. अन्य धर्मो पर श्रमण-परम्परा की छाप, २०. प्राचीन काल मे श्रमण-सस्था का कष्ट-सहन, २१. श्रमण और प्रचार, २२. महावीर और भारत की तत्कालीन अवस्था, २३. महावीर के साधु, सेवक-सेना, २४. लोक-भाषा का प्रश्रय, २५. महावीर की परम्परा की रक्षा, २६. विश्व के नाम महावीर का सन्देश, २७. शिष्य-परम्परा ।

४. मुक्ति-मार्ग ४९–६०

१. मुक्ति की परिभाषा, २. सम्यग्दर्शन, ३. सम्यग्दर्शन के आठ अग––(नि शकित, निकाक्षित, निर्विचिकित्सा, अमूढ़ दृष्टित्व, उपवृहण, स्थिरी-करण, वात्सल्य, प्रभावना) ।

५. सम्यग् ज्ञान ६१–११२

१. सम्यग् ज्ञान का स्वरूप—स्वरूप, ज्ञान की यथार्थता व अयथार्थता, ज्ञान के भेद, ज्ञान की प्रत्यक्ष परोक्षता, मतिज्ञान के भेद, ज्ञान का क्रम-विकास, श्रुत-ज्ञान, मति-श्रुत का अन्तर, श्रुत का प्रामाण्य, भेद, जैनाचार्यो की साहित्य सेवा, अवधि-ज्ञान, मन पर्याय-ज्ञान, केवल ज्ञान । २ विश्व का विश्लेषण (द्रव्य व्यवस्था)—द्रव्य व्यवस्था का उद्देश्य, द्रव्य क्या है, विश्व का मूल, पृथक्करण, जीवद्रव्य, अजीव । ३. तत्त्व-चर्चा—जीव, अजीव, पुण्य के भेद, पाप, आस्रव, सवर, वन्ध, मोक्ष । ४. प्रमाण-मीमासा—प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम प्रमाण, उपमान प्रमाण । ५ नयवाद—नय का स्वरूप, नय की सत्यता, नय के भेद । ६. अनेकान्त, ७ स्याद्वाद, ८ भाषा नीति-निक्षेप विधान ।

६. मनोविज्ञान ११३–१३३

१. इद्रियाँ (पाच), २ इद्रियो के विषय, ३ मन, ४. लेश्या (कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या, तेजो लेश्या, पद्म लेश्या, शुक्ल लेश्या), ५ कषाय—१ कषाय का अर्थ—कषाय के भेद १ क्रोध, २. अभिमान, ३. माया, ४. लोभ ।

७. जैन योग १३५–१४८

१ योग । २ जैन धर्म मे अष्टांग योग—महाव्रत (यम), योगसग्रह (नियम), कायक्लेश (आसन), भावप्राणायाम (प्राणायाम) प्रतिसलीनता (प्रत्याहार), धारणा (धारणा), ध्यान (ध्यान), समाधि (समाधि) । ३ ध्यान—आर्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान, (पिण्डस्थ ध्यान, पदस्थ, रूपस्थ, रूपा-तीत), शुक्ल ध्यान ४. समाधि ।

८. आध्यात्मिक उत्क्रान्ति १४७-१५३

१. चौदह गुणस्थान—मिथ्यात्व गुणस्थान, सास्वादन गुण-स्थान, मिश्र गुणस्थान, अविरत सम्यग्दृष्टि, देशविरति, सर्व-विरति गुणस्थान, अप्रमत्तसयत गुणस्थान, अपूर्वकरण, अनि-वृत्तिकरण गुणस्थान, सूक्ष्म सम्पराय, उपशान्तमोह गुणस्थान क्षीणमोह, सयोगी केवली, अयोगी केवली गुणस्थान ।

९. कर्मवाद १५५–१७३

१. जैन दर्शन मे कर्म का स्थान—कर्म के भेद (द्रव्यकर्म, भाव-कर्म) ,कर्मबन्ध के दो मुख्य कारण, कर्मों का वर्गीकरण, कर्मों का स्वभाव (ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयुकर्म, नामकर्म, गोत्रकर्म, अन्तरायकर्म), कर्मक्षय से लाभ, पुनर्जन्म की प्रक्रिया।

१०. चारित्र और नीतिशास्त्र १७५–२१७

१. द्विविध धर्म—अगार धर्म, अनगार धर्म, २. व्रतविचार—व्रत की परिभाषा, व्रत की आवश्यकता, ३. मूलभूतदोष—हिंसा, असत्य, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, ४ गृहस्थ धर्म की पूर्व भूमिका—संघ का विभाजन, श्रावक पद का अधिकार, ५. गृहस्थ धर्म, ६. अणुव्रत—अहिंसाणुव्रत, सत्याणुव्रत, अचौर्याणुव्रत, ब्रह्मचर्याणुव्रत, परिग्रह-परिमाण अणुव्रत (गुणव्रत और शिक्षाव्रत), ७. श्रावक के तीन प्रकार—पाक्षिक, नैष्ठिक, साधक, ८. जीवन नीति, ९. जीवन का मूलाधार अहिंसा, १०. मुनि धर्म, ११ पांच महाव्रत, १२. पाच समिति, १३. तीन गुप्ति, १४. अनाचीर्ण, १५. बारह भावनायें, १६. चार भावना, १७, दशविध धर्म, १८. निर्ग्रन्थो के प्रकार, १९. आवश्यक क्रिया, २० साधना की कठोरता, २१ साधना का आधार, २२. मृत्युकला (सलेखनाव्रत)।

११. जैनधर्म की परम्परा २१९–२३०

१. जैन सम्प्रदाय, २ भारत के आध्यात्मिक निर्माण मे जैनाचार्यों का योग, ३ राजाओं का योगदान, ४. मन्त्री और सेनापति, ५. जैन धर्म का प्रसार।

१२. जैनधर्म की विशेषताएँ २३१–२४२

१. जैन धर्म की वैज्ञानिकता, २ सृष्टि-रचना, ३ पृथ्वी का आधार, ४ स्थावर-जीव, ५ लोकोत्तर-ज्ञान, ६ अनेकान्त दृष्टि, ७. अहिंसा, ८. अवतारवाद ९ गुणपूजा, १०. अपरिग्रहवाद।

१ जैन शिष्टाचार—देव और गुरु के प्रति, वन्दनापाठ, श्रमणो का पारस्परिक शिष्टाचार, श्रावको का पारस्परिक शिष्टाचार, पति-पत्नी सम्बन्धी, स्वामी सेवक सम्बन्धी
२ जैन पर्व—सम्वत्सरी, दशलक्षण पर्व., अष्टान्हिका पर्व, आयबिल-ओलि पर्व, श्रुत पचमी, महावीर जयन्ती, दीपावली, तथा सलूनो रक्षाबधन ।